International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 11 Issue 3 Ser. II || March, 2022 || PP. 55-61

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सम्प्रेशन कौशल का अध्ययन

पंकज प्रकाश
अस्सिटेंट प्रोफेसर
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज अनूपशहर

शोध सारांश:- अनेकता में एकता वाले हमारे देश अनेक भाषाएँ बोली और लिखी जाती है किन्तु हिन्दी जहाँ हमारे देश की राष्ट्रभाषा एवं सम्पर्क भाषा है वहीं उत्तर भारत में अधिकतर लोगों की यह मातृ भाषा भी है किन्तु दुर्भाग्य यह कि इतना सब होते हुए भी हिन्दी सम्प्रेषण में लगभग सभी स्तरों पर विधार्थी अनेक त्रुटियां करते है और इसमें निश्चित ही शिक्षा का स्तर भी प्रभावित होता है त्रुटियों से हमारा आशय क्या है, इसे जान लेना आवश्यक है वस्तुस्थिति यह है कि किसी समय विशेष में जन-जन में प्रचारित भाषा के साथ-साथ एक औपचारिक भाषा भी होती है जो स्थानीय, भौगोलिक एवं अन्य प्रभावों से निरापद सभी स्थानों में एकरूपता लिए होती है यही शिक्षण का माध्यम होता है इसी में पाठ्य-पुस्तकें लिखी जाती है तथा यही भाषा भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहने वाले में लिखित एवं मौखिक रूप से सम्पर्क सूत्र का कार्य करती है।

प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी सम्प्रेषण

में होने वाली त्रुटियों का अध्ययन कक्षा 6 के छात्र-छात्राओं पर किया गया था। जिसका उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर सम्प्रेषण कौशलों में सुधार की आशा करते हुए किया था। प्रस्तुत अध्ययन बुलंद शहर जिले के कुछ विद्यालयों तक ही सीमित रहा जिसमें सम्प्रेषण कौशलों अध्ययन हेतु छोटे न्यादर्श को लिया गया था परीक्षण में केवल भाषा सम्बन्धी कौशलों के अंतर्गत केवल सम्प्रेषण कौशल को लिया गया था। सम्प्रेषण कौशल के विकास पर अन्य कारकों जैसे सामाजिक, आर्थिक स्तर आदि को नियंत्रित किया गया है यह नियंत्रण एक ही सामाजिक आर्थिक परिवेश के विद्यालयों का चयन करके किया गया था। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया था। प्राप्त परिणाम से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लिंग भेद का पर प्रभाव नहीं होता है। हिन्दी भाषा के शुद्ध प्रयोग एवं उसे लोकप्रिय बनाने के लिए केवल शिक्षक का ही नही परन्तु प्रशासकों को भी निबंध लेखन, कहानी लेखन प्रतियोगिताओं एवं भाषा प्रयोगशाला की व्यवस्था करके विद्यार्थियों की लेखन एवं पठन समंधी अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए /

Keyword- प्राथमिक स्तर, सम्प्रेषण कौशल

प्रस्तावना:- सम्प्रेषण को शिक्षा का हृदय कहा जाता है क्योंकि सम्प्रेषण के बिना शिक्षा और शिक्षण दोनों की ही कल्पना नहीं की जा सकती। सम्प्रेषण करने की, विचार-विनिमय करने की, अपनी बात दूसरों तक पहुँचने की और दूसरों की बात सुनने की, विचारों, अभिवृत्तियों, संवेदनाओं एवं ज्ञान के विनिमय करने की एक प्रक्रिया है। सम्प्रेषण के अर्थ को समझने के लिए हमें विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों की परिभाषाओं को आत्मसात करना होगा जिन्होंने समय-समय पर शिक्षा की प्रक्रिया में सम्प्रेषण के अर्थ एवं प्रत्यय में सुधार लाकर परिवर्तन किये हैं, उनमें से प्रमुख निम्नलिखित है।

एन्डरसनः- " सम्प्रेषण एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति चेतनतया अथवा अचेतन तथा दुसरों के संज्ञानात्मक ढांचे को सांकेतिक रूप में, उपकरणों या साधनों द्‌वारा प्रभावित करता है। "

लीगन्सः- " सम्प्रेषण वह प्रक्रिया है जिसके द्‌वारा दो या दो से अधिक लोग, विचारों तथ्यों, भावनाओं तथा प्रभावों आदि का इस प्रकार विनिमय करते हैं कि सभी लोग प्राप्त संदेशो को समझ जाते है। सम्प्रेषण में संदेश देने वाले तथा संदेश ग्रहण करने वाले के मध्य संदेशो के माध्यम से समन्वय स्थापित किया जाता है।"

लूगीस एवं वीगलः- " सम्प्रेषण वह प्रक्रिया है जिसके द्‌वारा सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत सूचनाओं, निर्देशों तथा निर्णयों द्‌वारा लोगों के विचारों, मतों तथा अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाया जाता है।"

एडगर डिले :- " सम्प्रेषण विचार विनिमय के मूड में विचारों तथा भावनाओं को परस्पर जानने तथा समझने की प्रक्रिया है।"

सम्प्रेषण में सामान्यतः व्यक्ति उन्हीं चीजों/विचारों का प्रत्यक्षीकरण करते हैं, जिनकी उन्हें अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, मूल्यों, प्रेरकों, परिस्थितियों या पृष्ठभूमि के अनुसार चाह / आकांक्षा या प्रत्याशा होती है। सम्प्रेषण, मानवीय तथा सामाजिक वातावरण को बनाये रखने का कार्य करता है। सम्प्रेषण के चार प्रमुख कार्य है-

अ. सूचना प्रदान करना,

ब. निर्देश अथवा आदेश या संदेश प्रेषित (प्रसारित) करना,

स. परस्पर विश्वास जाग्रत करना,

द. समन्वय स्थापित करना।

सम्प्रेषण की उपयुक्त परिभाषाओं एवं प्रत्यय के आधार पर कहा जा सकता है कि- "सम्प्रेषण एक गत्यात्मक, उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें सम्प्रेषण सामग्री, सम्प्रेषण करने वाला तथा सम्प्रेषण ग्रहण करने वाला होता है। इसमें सूचानाओं तथा विचारों का सम्प्रेषण एवं ग्रहण, लिखित, मौखिक अथवा संकेतो के माध्यम से होता है। "

सम्प्रेषण की प्रक्रियाः- सम्प्रेषण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्‌वारा मानवीय सम्बन्ध स्थापित होते हैं, दृढ़ होते हैं तथा विकसीत होते है। सम्प्रेषण की प्रक्रिया, सामाजिक संरचना में इस प्रकार से जुड़े हुए है, कि बिना सम्प्रेषण के सामाजिक जीवन की कल्पना करना असम्भव है।

सम्प्रेषण की प्रक्रिया को साधारण मॉडल के रूप में नीचे प्रदर्शित किया गया है-

इस मॉडल के अनुसार जो व्यक्ति संदेश भेजता है, वह संदेश बनाता है उसे लिखता है (encoding), फिर किसी न किसी माध्यम के द्‌वारा (जैसे रेडिया, टेलिफोन, तार, भाषण आदि) संदेश प्रेषित किया जाता है। प्रेषित सन्देश जिसके लिए हैं, उसके पास तक पहुँचाते है। वह व्यक्ति संदेश प्राप्ति की सूचना देता है।

सम्प्रेषण के प्रकारः- प्रायः विद्‌वजन सम्प्रेषण का वर्गीकृत कई आधारों पर करते हैं, परन्तु इनका वर्गीकरण तीन आधारों पर करना अधिक तार्किक है-

1. अभिव्यक्ति के आधार पर

क.सशब्द अथवा शब्दिक सम्प्रेषण

ख. मूक अथवा अशब्दिक सम्प्रेषण

2. आदान-प्रदान के आधार पर

क. व्यक्तिनिष्ठ अथवा एक पक्षीय सम्प्रेषण

ख. अन्तवैयक्तिक अथवा द्विपक्षीय सम्प्रेषण

3. व्यक्तियों की संख्या के आधार पर-

क. व्यक्ति से व्यक्ति सम्प्रेषण

ख. लघु समूह सम्प्रेषण

ग. वृहद् समूह सम्प्रेषण अथवा जनसंचार

शोध-सहित्य सर्वेक्षण:- अनुसंधान कार्य के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना अति आवश्यक है। सम्बन्धित साहित्य से तातपर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बद्ध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधान कर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आए है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते गुड, बार तथा स्केटस (1959) कहते है।

"एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक है।"

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली भांती अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान से प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य को, पुनर्निरीक्षण शब्द को, इस प्रकार परिभाषित किया गया है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार:- "व्यवहारिक रूप से सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तक और पुस्तकालय में मिल सकता है। ज्ञान के विस्तृत भण्डार में उसका योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किये गए प्रयासों की सफलता को संभव बनाता है।"

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्तवपूर्ण कदम है। पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। समस्या से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

पठन विषय पर हुये शोध कार्य का विवरण:-

1. राव (1986) का शालेय छात्रों में पठन् अयोग्यता कि प्रकृति और विस्तार नामक विषय पर शोध कार्य
2. कॉपर बी (1980) का पठन बोध को प्रभावितकर्ने वाले तत्वों कि जाँच नामक विषय पर शोध कार्य
3. बोरा ऐन० ए० (1988) का पठन बोध का मनोवैज्ञानिक प्रभाव से सहसम्बन्ध का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य
4. बेवर (1990) बीर मिलर (1990) का मौखिक वाचन मे होने वाली त्रुटियों का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य

5. कुसुम रस्तोगी (2008) का हिन्दी में अशुद्धियों का विवेचनात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोधकार्य
6. मिश्रा (2011) का सामाजिक शैक्षिक स्तर के संदर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियो की भाषा इसम्पन्नटाका अध्ययन नामक विषय पर शोधकार्य

शोध उपकरण:- किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए साधन के रूप में उपकरण का होना आवश्यक है। यह कहा जाये की उपकरण के आभाव में कोई भी शोध कार्य संभव नही है तो कोई अतिश्योक्ति नही, वास्तविकता होगी इसी तथ्य को ध्यान रखते हुए शोधकर्ता ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु जिन उपकारणों का निर्माण किया है उसका वर्णन निम्नलिखित है।

उपकरणों का निर्माण कक्षा 6 के विधाथियों द्वारा सम्प्रेषण कौशल मे की जाने वाली त्रुटिओ को ज्ञात करने के लिए कक्षा 5 के हिन्दी पाठ्यपुस्तक की विष्यवस्तु के आधार पर विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया कुल तीन अनुच्छेद इस प्रकार तैयार किये गये है जिससे मौखिक पठन के दौरान की जाने वाली भाषा की त्रुटियो, को मापा जा सकता है बोध परीक्षण के लिए प्रत्येक अनुच्छेद में 4-4प्रश्न रखे गये जिसमे दो-दो प्रश्न तथ्य परक पर आधारित है और दो-दो अनुमानिक तथ्यों पर आधारित है अंकन करने की व्यवस्था भी इस परीक्षण में सम्मिलित थी मौखिक पठन के लिए 15 मिनट का समय रखा गया किन्तु समय की पाबंदी नही रखी गई थी।

आंकड़ो का विवरण शोधकर्ता ने चयनित विद्यालयों में सम्बन्धित प्राध्यापकों की सहमति एवं सहायता से प्रदत्त संकलन का कार्य आरम्भ किया। शोधकर्ता ने चयनित 4 विद्यालयों के कुल 100 विद्यार्थियों पर अपने उपकरण का प्रशासन किया। तत्पश्चात उसका मूल्याँकन कर प्रतिशत ज्ञात किए। शोधकर्ता द्वारा परिकल्पनाओं के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में निकाले प्रतिशतों को निम्नलिखित तालिकाओं के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

		मंद	औसत	उत्तम
छात्रों का (N=50)	उच्चारण	67%	27%	6%
	ध्वनि	60%	34%	6%
	विराम	53%	34%	13%
	ज़ोरदेना	73%	27%	0%
छात्राओं का (N=50)	उच्चारण	73%	27%	0%
	ध्वनि	67%	27%	6%
	विराम	60%	34%	6%
	ज़ोरदेना	53%	34%	13%

परिणाम:- शोधार्थी के द्वारा प्राप्त किये गए प्रतिशत से यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही समुह (छात्र/छात्राओ) सम्प्रेशन सभी आयामों में कमजोर है। सम्प्रेशन के विभिन्न आयामों जैसे उच्चारण में कुल छात्रों का 67 प्रतिशत छात्र मन्द पाये गये जबकि कुल छात्रों का 73 प्रतिशत छात्राएँ मन्द पाई गई। इसी प्रकार ध्वनि, विराम, तथा जोर देने पर भी छात्र तथा छात्राओं के कुल का 60 प्रतिशत, 53 प्रतिशत 73 प्रतिशत 67 प्रतिशत 16 प्रतिशत 53 प्रतिशत रहा। इन सभी आयामों पर छात्रों में कुल का 27, 34, 24, 27 प्रतिशत,एवं छात्राओ का 27,27,34, तथा 34 प्रतिशत पाया गया। अर्थात स्म्प्रेशन कौशल मे छात्र/छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध निष्कर्ष:- किसी भी शोध कार्य को करने के पश्चात शोध करता का मुख्य उद्देश्य निष्कर्ष निकलना होता है प्रस्तुत शोध कार्य में विश्लेषण तथा विवेचना करने के उपरांत छात्रों तथा छात्राओं द्वारा सम्प्रेशन के समय की जाने वाली त्रुटियों का विश्लेषण करने के उपरांत उनसे प्राप्त निष्कर्षों को निम्नलिखित बिन्दुओ के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

"छात्रों तथा छात्राओं का सम्प्रेषण कौशल सम्बनधी त्रुटियों का निष्कर्ष "

अ. छात्रों तथा छात्राओं द्वारा पठन के समय की गयी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

ब.छात्रों तथा छात्राओं द्वारा पठन के समय की गयी ध्वनि सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

स. छात्रों तथा छात्राओं द्वारा पठन के समय की गयी विराम सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

द. छात्रों तथा छात्राओं द्वारा पठन के समय की गयी जोर देना सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

आंकड़ों से यह बात स्पष्ट होती हैं। कि जिन छात्र तथा छात्राओं का पठन कौशल पूर्ण रूप से निरूपित नहीं होती उनकी सम्प्रेषण कौशल में भी समस्या होती है ।

भाषा संप्रेशन के मध्य लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है जिसके मुख्या कारण निम्नलिखित है-

1-केन्द्र् सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम जो बालिका शिक्षा को बढ़ावा देते है जिनसे लिंग भेद समाप्त हुआ है।
2-बलिकओ की शिक्षा के प्रति उनके माता पिताओ की सोच में अंतर आना भी एक कारण ओ सकता है अब संरक्षक पुत्र की शिक्षा के साथ-साथ पुत्रियों की शिक्षा के बारे में गंभीर हुए है तथा उन्हे भी पड़ने का अवसर देते है
3-सन्चार के साधनों, समाचार पत्रों,टेलीविज़न तथा रेडियो द्वारा भी अभिभावकों के मन में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता आरंभ हुई है जिससे लिंग भेद समाप्त हुआ।

शोध की शैक्षिक उपयोगिता:- शिक्षा का सम्पूर्ण कार्यक्रम भाषा के बल पर ही चलता है। अतः सम्पूर्ण शिक्षा-क्रम में भाषा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सभी विषयों के शिक्षण का मूल साधन भाषा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन को शैक्षिक दृष्टि से बहुत महत्ता है। यह सत्य है कि प्राथमिक स्तर पर इन विद्यार्थियों की शिक्षा का माध्यम हिन्दी है और भविष्य में उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही होगा। ऐसी अवस्था में भाषा पर अधिकार न होने से छात्र - छात्राऐं शिक्षा में पूरी तरह सफलता प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि त्रुटियों में सुधार हेतु वृहद स्तर पर प्रयास किये जायें जिससे ये छात्र-छात्राऐं हिन्दी भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों में भी पारंगत हो सके। इस अध्ययन द्वारा पठन त्रुटियों को कम करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकेगा। इस शोध कार्य का लाभ वृहद् समाज का हो सकेगा। अध्यापक विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली पठन सम्बन्धी त्रुटियों को जानने हेतु सक्रिय रहेगा व त्रुटियों के निदान हेतु उपाय करेगा।

सुझाव:- हिन्दी भाषा अपनी एकरूपता के लिए प्रशिद्ध है और इसमे जैसा बोला जाता है बैसा हीं लिखा जाता है इसलिए पठन का इस भाषा में अत्यधिक महत्व है। अत: पठन में होने वाली त्रुटितों के निराकरण हेतु हमने सुझावो को दो भागो में विभक्त किया है -

क. अध्यापको के लिए सुझाव

ख. प्रशासको के लिए सुझाव

क.अध्यापको के लिए सुझाव -

1- भाषा अध्यापको से यह अपेक्षा की जाती है कि वो अपने उच्चारण में स्थानीयता ना आने दे , क्योकि जब धवनियों का यथावत उच्चारण होगा तो ऐसा कोई धारण नही है कि सम्परेशन की शुद्धता में बाधा आये ।

2-अध्यापको को ऐसे विद्याथियों की अनुकर्मिनिका तैयार कर लेनी चाहिए ओर उनका वर्गीकरण त्रुटियों के आधार पर कर लेना चाहिए जो सम्परेशन सम्बन्धी अधिक त्रुटि करते है। फिर उनके सुधार हेतु विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए।

3- अध्यापको को पढ़ाते और लिखाते समय त्रुटियों को उसी समय सुधारना चाहिए जिससे की उनकी पुनरावृति ना हो।

4-विध्यर्थियो को प्रतिदिन स्वर एवं व्यंजनों के अतिरिक्त अनुस्वर, विसर्ग, चंद्रविन्दु आदि का शुद्ध उच्चारण सिखाकर विद्यार्थियों को इनके प्रयोग मे कुशल बनाना चाहिए।

5- हिन्दी शिक्षकों को यह नियम बना देना चाहिए कि हिन्दी की कक्षा मे होने वाली वार्तालाप केवल हिन्दी में हो, स्थानीय भाष में नही।

ख.प्रशासको के लिए सुझाव-

हिन्दी भाषा के शुद्ध प्रयोग उसे लोकप्रिये बनाने के लिए केवल शिक्षक का हीं नही परन्तु प्रशासको का भी सहयोग अपेक्षित है। निम्न सुझाव इस दिशा में सहायक हो सकते है।

1- सप्ताह में अन्य विषयो की तुलना में हिन्दी अध्यापक हेतु अधिक घंटो का समय दिया जाना चाहिए।
2- हिन्दी शिक्षकों को शिक्षा की नवीन विधियों का ज्ञान कराने के लिए नवीन पाठ्यक्रम व अध्यापक प्रशिक्षण का आयोजन सरकार द्वारा ग्रीष्मकालीन या शीतकालीन अवकाश में किये जाने चाहिए।
3- भाषा सम्प्रेषण में सुधार हेतु यदि संभव हो तो भाषा प्रयोगशाला कि व्यवस्था कि जाए जिससे त्रुटियो के बारे में जानकारी होने पर उनका उपचार सम्भव है। भाषा प्रयोगशाला में हिन्दी के उच्चारण अभ्यास कि विशेष व्यवस्था है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.शास्त्री, भूदेव- "मातृभाषा का अध्ययन", लक्ष्मीनारायण प्रकाशक,आगरा, 1967

2.सुखिया एवं मल्होत्रा - "शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1982

3. कौल, लोकेश - "मैथोडोलॉजी ऑफ एजूकेशन रिसर्च", नई दिल्ली, 1982

4. चन्दौल, लता- "सम्प्रेषण", रति बुक्स, नई दिल्ली, 2004

5. गैरट, एच.ई. "शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग". कल्याणी पब्लिशर्स, 1969

6. जोशी, योगेश कुमार- "हिन्दी वर्तनी समस्या व समाधान", राज. बोर्ड पत्रिका, अगस्त, 1982

7. राय, पारसनाथ "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मीनारायण प्रकाशन, आगरा, 1999

8. खत्री, किशोर- "हिन्दी भाषा अशुद्धियाँ और संशोधन", राज. बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अप्रैल-जून, 1992

9. कृष्णानंद, रोहिणी "अहिन्दी भाषी बच्चों के लिए प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की रूचिकर पद्धतियाँ" प्राईमरी शिक्षक, अप्रैल,1996

10. कुमार, अनूप "गृहभाषा और मानक भाषा हिन्दी शिक्षण के सन्दर्भ में भारतीय आधुनिक शिक्षा", अप्रैल, 2001

11.गुप्ता, सुशीला- "कक्षा 8 छात्रों की हिन्दी वर्तनी की त्रुटियाँ", एम. एड. राजस्थान विश्वविद्यालय, 1953

12. राठौड़ मोतीसिंह "डिसएबिलिटिज इन हिन्दी स्पेलिंग", एम.एड. राजस्थान विश्वविद्यालय, 1966

13. आनन्द वी.एस. "हिन्दी की वर्तनी को प्रभावित करने वाले कारकों व दिल्ली क्षेत्र के हिन्दी माध्यम के स्कूलों के कक्षा 5 के लेखन में वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन व उसके लिए उपचारात्मक कार्यक्रम का सुझाव, पी.एच.डी. एस.एन.डी.टी.यू. 1985

14. शुक्ला, सीमा "प्राथमिक कक्षा के ग्रामीण विद्यार्थियों की वर्तनी की अशुद्धियां कारक एवं निवारण", शिक्षा संस्थान, देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय, इन्दौर, 1998